सारांश:

प्रस्तुत शोध कोसी नदी निवासियों की चुनौतियां, प्रबंधन-प्रारूप का वास्तविकता का अध्ययन है। जिसके अंतर्गत चयनित गांवों के उत्तरदाताओं की सामाजिक-आर्थिक,जागरूकता,समस्या और चुनौतियों जानकारी प्राप्त करना है इन तमाम महत्वपूर्ण पहलुओं को शामिल किया गया है। प्रस्तुत शोध अध्ययन के दौरान प्राप्त की गई प्राथमिक तथ्यों पर आधारित है, जिनमें निर्मली और मरौना गांव के अंतर्गत चयनित कोसी नदी निवासियों की संरचनात्मक पृष्ठभूमि, चयनित कोसी नदी निवासियों के उत्तरदाताओं में सामाजिक-आर्थिक, जागरूकता, समस्या और चुनौतियों की जानकारी को सार-पक्ष को महत्व दिया गया है। जिसके माध्यम से शोध अध्ययन के सभी मूलभूत पहलुओं को सरलता से समझा जा सके। साथ ही शोध अध्ययन की समग्र बिंदु अर्थात निष्कर्ष को शामिल भी किया गया है। जो अध्ययन के तत्पश्चात शोधार्थी द्वारा दिए गए विषय संबंधी महत्वपूर्ण तथ्य है, जिससे शोध की विश्वनीयता व उसकी उपयोगिता को रेखांकित किया जा सके।

कोसी नदी निवासियों को बाढ़ से उत्पन्न होने वाली समस्या, चुनौतियां और प्रबंधन का कार्यान्वयन कोसी नदी निवासी कैसे करते हैं। शोध के माध्यम से देखना है। साथ ही बाढ़ से बचाव के लिए कौन-कौन-से माध्यम प्रयोग करते हैं। यही शोध के महत्व को दर्शाता है। प्रस्तुत शोध के माध्यम से यह जानने का प्रयास किया गया है। इससे के लिए प्रस्तुत शोध में कोसी नदी निवासियों की समस्या, चुनौतियां,प्रबंधन और जागरूकता का अध्ययन किया गया है। शोधार्थी के जानकारी के अनुसार अभी तक कोसी नदी निवासियों को बाढ़ से उत्पन्न होने वाली समस्या, चुनौतियां और प्रबंधन का अध्ययन नहीं किया गया है। इस दृष्टि से यह शोध को विशेष महत्व रखता है। प्रस्तुत शोध कार्य के अंतर्गत 'कोसी नदी निवासियों' की समस्या व चुनोतियाँ और प्रबंधन-प्रारूप उसके के अध्ययन का प्रयास किया गया है तथा ग्राम-पंचायत व स्थानीय निवासियों से प्राप्त डाटा के अध्ययन के आधार पर हस्तक्षेप के लिए रणनीति तैयार करने का प्रयास किया गया है। प्रस्तुत शोध कार्य को करने के लिए मिश्रित पद्धति (गुणात्मक एवं मात्रात्मक) का उपयोग किया गया है तथा शोध के उद्देश्यों के आधार पर यह शोध कार्य निदानात्मक शोध प्रारूप (Diagnostic Research Design) में आता है। क्योंकि जहां व्याख्यात्मक शोध घटनाओं के कारणों को जानने के उद्देश्य से की जाती है, वहाँ निदानात्मक शोध समस्याओं के समाधान करने के मुख्य उद्देश्यों से की जाती है। इस प्रकार की शोध मुख्यतः व्यावहारिक विज्ञानों जैसे सामाजिक कार्य में की जाती है। एक चिकित्सक की भांति एक सामाजिक शोधकर्ता की रुचि भी किसी समस्या (शारीरिक/मानसिक/सामाजिक) के समाधान की होती है। अतः निदानात्मक शोध भी पहले समस्या के कारणों की खोजकर उसके समाधान के तरीकों या उपायों की खोज करता है, ताकि सामाजिक समस्या का वैज्ञानिक ढंग से समाधान किया जा सके। प्रस्तुत शोध में निर्मली और मरौना गांव में रहने वाले निवासि (परिवार

मुखिया/ अभिभावक/ प्रमुख) को प्रस्तुत शोध अध्ययन की पूर्ति हेतु अध्ययन की इकाई माना गया है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में निर्मली और मरौना गांव में रहने वाले समस्त निवासियों (परिवार मुखिया/ अभिभावक/ प्रमुख) को मिलाकर अध्ययन समग्र बनाया गया है।। प्रस्तुत शोध कार्य में प्राथमिक स्त्रोत द्वारा तथ्यों का संकलन करने के लिए संरचित साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में द्वितीय स्त्रोत के लिए लाइब्रेरी मेथड्स का प्रयोग किया गया है। डाटा प्रोसेस करने के लिए SPSS का उपयोग किया गया है।

सारणी 5.2 यह दर्शाती है कि वयस्क उत्तरदाताओ में 8.3 प्रतिशत उत्तरदाताओं को ज्यादा चुनौतियों का सामना करना पड़ता है जबकि वृद्ध उत्तरदाताओं में ऐसा एक भी उत्तरदाता नहीं है जिसे ज्यादा चुनौतियों का सामना करना पड़ता है । प्राप्त तथ्यों से यह ज्ञात होता है कि उत्तरदाताओ को आनेवाली चुनौतियां उनके जीवनकाल से प्रभावित हो रही है । सारणी में Chi-Square Tests के माध्यम से स्पष्ट होता हैं कि Calculative value of Chi-Square .721[a] है। Degree of freedom 1 है एवं Level of significance .396 है जोकि .05 से ज्यादा है। इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि उपर्युक्त सारणी में पाए गए तथ्य यथार्थपूर्ण नहीं हैं। इस आधार पर शून्य प्राप्त प्राकल्पना को स्वीकार करते हुए शोध अध्ययन की परिकल्पना "उत्तरदाताओं की वयस्कों की तुलना में वृद्धों को ज्यादा समस्या और चुनौतियां का सामना करना पड़ता है।।" यह स्थापित नहीं होती है । सारणी 5.2 में 1 सेल्स में मानक गणना 5 से कम होने के कारण Chi-Square Test के परिणामों को मान्य करने में बाधा उत्पन्न होती है।

सारणी 4.11 यह दर्शाती है कि वयस्क उत्तरदाताओ में 33.3 प्रतिशत उत्तरदाताओ को ज्यादा चुनौतियां का सामना करना पड़ता है। जबकि वृद्ध उत्तरदाताओ में ऐसा एक भी उत्तरदाता नहीं है जिसे ज्यादा चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। प्राप्त तथ्यों से यह ज्ञात होता है कि उत्तरदाताओ को आनेवाली चुनौतियां उनके जीवनकाल से प्रभावित हो रही है । सारणी में Chi-Square Tests के माध्यम से स्पष्ट होता हैं कि Calculative value of Chi-Square 3.810[a] है। Degree of freedom 1 है एवं Level of significance .051 है जो कि .05 से ज्यादा है। इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि उपर्युक्त सारणी में पाए गए तथ्य यथार्थपूर्ण हैं। इस आधार पर शून्य प्राप्त प्रारकल्पना को अस्वीकार करते हुए शोध अध्ययन की परिकल्पना "उत्तरदाताओं की वयस्कों की तुलना में वृद्दों को ज्यादा समस्या और चुनौतियां का सामना करना पड़ता है।।" यह स्थापित नहीं होती है । सारणी 5.2 में 1 सेल्स में मानक गणना 5 से कम होने के कारण Chi-Square Test के परिणामों को मान्य करने में बाधा उत्पन्न होती है।

सारणी 4.12 यह दर्शाती है कि उच्च प्राथमिक स्तर तक पढ़ चुके 100.0 प्रतिशत उत्तरदाता पूर्णतः जागरूक है, तदोपरांत साक्षर/पूर्व प्राथमिक स्तर तक पढ़ चुके 50.0 प्रतिशत उत्तरदाता पूर्णतः जागरूक है, प्राथमिक स्तर तक पढ़ चुके 16.7 प्रतिशत उत्तरदाता पूर्णतः जागरूक है, निरक्षर स्तर के 9.1 प्रतिशत उत्तरदाता पूर्णतः जागरूक है, प्राप्त

तथ्यों के आधार पर यह ज्ञात होता है कि कोसी नदी निवासियों की चुनौतियां,प्रबंधन-प्रारूप के प्रति जागरूकता उत्तरदाताओ की शिक्षा के स्तर से प्रभावित हो रही है एवं जैसे-जैसे शिक्षा का स्तर बढ़ रहा है वैसे ही जागरूकता का स्तर भी बढ़ रहा है। सारणी में Chi-Square Tests के माध्यम से स्पष्ट होता हैं कि Calculative value of Chi-Square 33.247[a] है। Degree of freedom 3 है एवं Level of significance .000 है जोकि .05 से कम है। इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि उपर्युक्त सारणी में पाए गए तथ्य यथार्थपूर्ण हैं। इस आधार पर शून्य प्राप्त प्राकल्पना को अस्वीकार करते हुए शोध अध्ययन की परिकल्पना "उत्तरदाताओं की शिक्षा का स्तर एवं उनको आनेवाली चुनौतियां के प्रति जागरूकता से सबंधित हैं।" यह स्थापित होती है कि सारणी 5.2 में 2 सेल्स में मानक गणना 5 से कम होने के कारण Chi-Square Test के परिणामों को मान्य करने में बाधा उत्पन्न होती है।

प्रस्तुत शोध में चुनौतियों का अध्ययन के लिए भौतिक सत्यापन विधि का उपयोग किया गया था जिसको चित्रों के माध्यम से अध्याय 4.1 में दर्शाया है कि प्रत्येक 10 में से लगभग 9 उत्तरदाताओं की स्थानीय समस्या एवं चुनौतियां माध्यम है। जो कि यह दर्शाता है उत्तरदाताओं में औसतन स्थानीय समस्या एवं चुनौतियां माध्यम स्तर पर है। प्राप्त तथ्यों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि उत्तरदाता स्थानीय समस्या एवं चुनौतियां माध्यम है। कोसी नदी में हर साल बाढ़ आती है और इस समस्या का कोसी नदी वासियों को नियमित रूप से सामना करना पड़ता है यह स्थिति में जब अधिकतर उत्तरदाता स्थानीय समस्या एवं चुनौतियां माध्यम हैं जो कि प्रतिकूल स्थिति का निर्माण करता है।

प्रस्तुत शोध में चुनौतियों का अध्ययन के लिए भौतिक सत्यापन विधि का उपयोग किया गया था जिसको चित्रों के माध्यम से अध्याय 4.5 में दर्शाया है कि प्रत्येक 10 में से 7 उत्तरदाताओं की बाढ़ प्रबन्धन के प्रति अंशतः जागरूक है। जो कि यह दर्शाता है उत्तरदाताओं में औसतन जागरूकता अंशतः स्तर पर है। प्राप्त तथ्यों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि उत्तरदाता बाढ़ प्रबंधन में पूर्णत सक्षम नहीं है। कोसी नदी में हर साल बाढ़ आती है और इस समस्या का कोसी नदी वासियों को नियमित रूप से सामना करना पड़ता है यह स्थिति में जब अधिकतर उत्तरदाता जागरूक नहीं हैं जो कि प्रतिकूल स्थिति का निर्माण करता है। कोसी नदी निवासियों के बाढ़ से बचाव हेतु जागरूकता ऊँचे स्थान का निर्माण करना,जिसके सहारे तैर सकते हैं जैसे लाइफ जैकट ,गाड़ियों का टूयूब आदि,संसाधनों को रखना,सुरक्षित मार्गों की पहचान,आश्रय स्थल का निर्माण, उपयुक्त सामान को पहले से निकलना, आदि संसाधन के माध्यम से कोसी नदी निवासियों में जागरूकता लाया जा सकता है।

प्रस्तुत शोध में बाढ़ से पूर्व की जागरूकता का अध्ययन के लिए भौतिक सत्यापन विधि का उपयोग किया गया था जिसको चित्रों के माध्यम से अध्याय 4.6 में दर्शाया है कि प्रत्येक 10 में से 8 उत्तरदाताओं की बाढ़ से पूर्व पूर्णत: जागरूक है। जो कि यह दर्शाता है उत्तरदाताओं में औसतन जागरूकता पूर्णत: स्तर पर है। प्राप्त तथ्यों के आधार पर यह

कहा जा सकता है कि उत्तरदाता बाढ़ से पूर्व की जागरूकता पूर्णत सक्षम है। कोसी नदी में हर साल बाढ़ आती है और इस समस्या का कोसी नदी वासियों को नियमित रूप से सामना करना पड़ता है यह स्थिति में जब अधिकतर उत्तरदाता बाढ़ से पूर्व जागरूक हैं जो कि प्रतिकूल स्थिति का निर्माण करता है। प्रस्तुत शोध में बाढ़ के समय की जागरूकता का अध्ययन के लिए भौतिक सत्यापन विधि का उपयोग किया गया था जिसको चित्रों के माध्यम से अध्याय 4.8 में दर्शाया है कि प्रत्येक 10 में से 7 उत्तरदाताओं की बाढ़ के समय की पूर्णत: जागरूक नहीं है। जो कि यह दर्शाता है उत्तरदाताओं में औसतन जागरूकता अंशत : स्तर पर है। प्राप्त तथ्यों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि उत्तरदाता बाढ़ के समय की जागरूकता पूर्णत सक्षम नहीं है। कोसी नदी में हर साल बाढ़ आती है और इस समस्या का कोसी नदी वासियों को नियमित रूप से सामना करना पड़ता है यह स्थिति में जब अधिकतर उत्तरदाता बाढ़ के समय से जागरूक नहीं हैं जो कि प्रतिकूल स्थिति का निर्माण करता है। कोसी नदी निवासियों के बाढ़ के समय बचाव हेतु जागरूकता ऊँचे स्थान का निर्माण करना, जिसके सहारे तैर सकते हैं जैसे लाइफ जैकट ,गाड़ियों का टूयूब आदि, संसाधनों को रखना, सुरक्षित मार्गों की पहचान, आश्रय स्थल का निर्माण, उपयुक्त सामान के निकलना, आदि संसाधन के माध्यम से कोसी नदी निवासियों में जागरूकता लाया जा सकता है। प्रस्तुत शोध में बाढ़ के बाद की जागरूकता का अध्ययन के लिए भौतिक सत्यापन विधि का उपयोग किया गया था जिसको चित्रों के माध्यम से अध्याय 4.9 में दर्शाया है कि प्रत्येक 10 में से लगभग 7 उत्तरदाताओं की बाढ़ के बाद की पूर्णत: जागरूक नहीं है। जो कि यह दर्शाता है उत्तरदाताओं में औसतन जागरूकता अंशत: स्तर पर है। प्राप्त तथ्यों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि उत्तरदाता बाढ़ के बाढ़ की जागरूकता पूर्णत सक्षम नहीं है। कोसी नदी में हर साल बाढ़ आती है और इस समस्या का कोसी नदी वासियों को नियमित रूप से सामना करना पड़ता है यह स्थिति में जब अधिकतर उत्तरदाता बाढ़ के बाढ़ जागरूक नहीं हैं जो कि प्रतिकूल स्थिति का निर्माण करता है। कोसी नदी निवासियों के बाढ़ के समय बचाव हेतु जागरूकता ऊँचे स्थान का निर्माण करना, जिसके सहारे तैर सकते हैं जैसे लाइफ जैकट ,गाड़ियों का टूयूब आदि,संसाधनों को रखना, सुरक्षित मार्गों की पहचान, आश्रय स्थल का निर्माण, उपयुक्त सामान को निकालते हैं,आदि संसाधन के माध्यम से कोसी नदी निवासियों में जागरूकता लाया जा सकता है।